७१: सर्वमांगल्य

दिनांक १८-०६-२०१२

उपलब्धि

उपलब्धि का स्वरूप जीवन मंगल होना है | यह जागृति से प्रमाणित होता है | जागृतिपूर्वक ही मानव, मानवीयता, देव मानवीयता, दिव्य मानवीयतापूर्वक जीता है | मानवीयता व्यवहार में जागृति का प्रमाण है | देव मानवीयता विचार में जागृति का प्रमाण है | दिव्य मानवीयता अनुभव में जागृति का प्रमाण है | अनुभवपूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व को प्रमाणित करना ही अनुभव प्रमाण है | अनुभव प्रमाण सम्मत विचार व व्यवहार जागृत होता ही है | इस प्रकार जीना ही जागृत जीवन का मतलब है | मानवीयतापूर्वक जीना ही तीनों प्रकार से जीने का स्वरूप है | इस विधि से मानव स्वयं में सुरक्षित होता है | फलस्वरूप मनुष्येतर जीव संसार संतुलित होता है | इसी के साथ वनस्पति संसार, पदार्थ संसार संतुलित रहता है | अर्थात मनुष्येतर प्रकृति संतुलित रहना मानवीय विधि से जीने पर अथवा विकसित चेतना विधि से जीने पर प्रमाणित होता है | इस विधि से मानव में जागृति का प्रमाण है | इसमें संतुलित रहना ही समाधान अर्थात चारों अवस्था संतुलित रहना ही समाधान है | समस्या पूर्वक मानव क्लेष का अनुभव करता है | क्लेष मानव का अवांछित घटना है |

अभी तक मानव भ्रमवश क्लेष कार्यक्रमों में अधिकांश व्यस्त रहा है | सार्थक रूप में आंशिक रूप से कार्य किया है | मानव द्वारा किया हुआ सार्थक रूप ही दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन के रूप में देखने को मिला है | मानव का करतूत से घटित हुई घटनाओं के अनुसार धरती बीमार होना, प्रदूषण छा जाना नकारात्मक सिद्ध हुआ है | इसे संतुलित बनाये रखने के उपाय को सोचना ही आज का आवश्यकता है | इसी को हम जागृति कहते हैं | अर्थात चारों अवस्थाओं का संतुलित रहना ही जागृति है | मानव का जागृति होने पर चारों अवस्थाएं संतुलित होते हैं | चारों अवस्थाएं संतुलित होना ही धरती का स्वर्ग होना है | यही छोटी सी बात मानव को नहीं पचा है | अथवा अभी तक समझ नहीं बना है | अथवा सर्वमानव का प्रयोजन निकला नहीं है | अभी तक सर्वमानव में समझदारी नहीं हो पाया | सर्वमानव में समझदारी होना ही मानव का विकसित परम्परा है | इसी क्रम में मानव सदा सदा से प्रयत्नशील है | इस क्रम में विकल्प प्रस्तुत हो चुका है | इसी आधार पर जीवन जागृति ही जीवन मंगल का प्रमाण है | इसी तरह सर्वमंगल ही उदय मंगल है | तीसरा क्रम में जिसका प्रमाण में समाधान मंगल है, इसके प्रमाण में जागृति मंगल स्पष्ट होता है | यही अनुभव मंगल का स्वरूप है | मानव परम्परा में मानवीयतापूर्ण विधि से जीना ही अनुभव मंगल है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज प्रणेता मध्यस्थ दर्शन,सह-अस्तित्ववाद,